चारों और से हो रहा अब माया का आक्रमण
फ़ैल गया सारे विश्व में विकारों का संक्रमण
काम क्रोध की महामारी की ऐसी आंधी आई
जिसमें घिरकर आत्माओं ने सच्ची खुशी गंवाई
विकारों के वश होकर सब गुणों से हुए कंगाल
बिना गुणों के करेंगे कैसे बच्चे अपनी सम्भाल
प्यार के सागर के बच्चे प्यार करना गए भूल
सबने चढ़ा ली अपने ऊपर विकारों की धूल
परमधाम से आये थे हम बनकर सुगन्धित फूल
देहभान के वश होकर हम बन गए कंटीली शूल
देहभान के सर्प ने सारे संसार को डस लिया
विकारों के नागपाश ने अपने शिकंजे में कस लिया
क्रोधवश होकर दुःख के कांटे सबको चुभाते हैं
दुःख देकर अपना खाता पापों से बड़ा बढ़ाते हैं
क्यों इक छोटी सी बात समझ नहीं हम पाते हैं
जो देते हम दुनिया को वही दुनिया से पाते हैं
प्यार देने से प्यार मिलेगा ये दुनिया का दस्तूर
सबको सुख देते जाओ तो मिलेगा सुख भरपूर